☆ तुम मुझे न शब्दों में बांध सकते हो और न मेरा मूल्यांकन करने की क्षमता है तुममें। मेरा परिचय केवल ज्योतिषी, मंत्र मर्मज्ञ, तंत्रज्ञ या आयुर्वेदज्ञ ही नहीं है, ये शब्द तो बहुत ही घिसे-पिटे और बौने हैं।

☆ इन शब्दों से मुझे पहिचाना नहीं जा सकता, अगर मेरी परिभाषा ही करनी है, तो कोई नया शब्द गढ़ना होगा, नए शब्द का सृजन करना होगा क्योंकि मैं एक साथ कई-कई रूपों में हूं।

☆ पूरा आकाश और ब्रह्माण्ड मेरा विचरण स्थल है, समस्त ग्रह-नक्षत्र मेरे आवास स्थल। मंत्र मेरे सामने हाथ बांधे खड़े रहते हैं, तो सिद्धियां मुझे रिझाने के लिए नृत्य करती रहती हैं, देवता मेरा सान्निध्य पाने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं, तो यक्ष, गन्धर्व, किन्नर, सेवा कर अपने आपको अहोभागी अनुभव करते हैं।

☆ और मैं तुम्हारे पाखण्ड, तुम्हारी संदेहशीलता, तुम्हारे शक, तुम्हारी न्यूनता, तुम्हारा ओछापन और तुम्हारी निर्लज्जता को मृत्यु देता हूं।

☆ मैं प्रेम से आपूरित हूं, श्रद्धा का सौन्दर्य हूं, विराटता का आकार हूं, सिद्धियों का अजस्र प्रवाह हूं। मैं तुम्हारा जीवन्त, जाग्रत, चैतन्य गुरु हूं, मेरे व्यक्तित्व को परिभाषित करने के लिए कोई नया शब्द ही गढ़ना पड़ेगा तुम्हें।

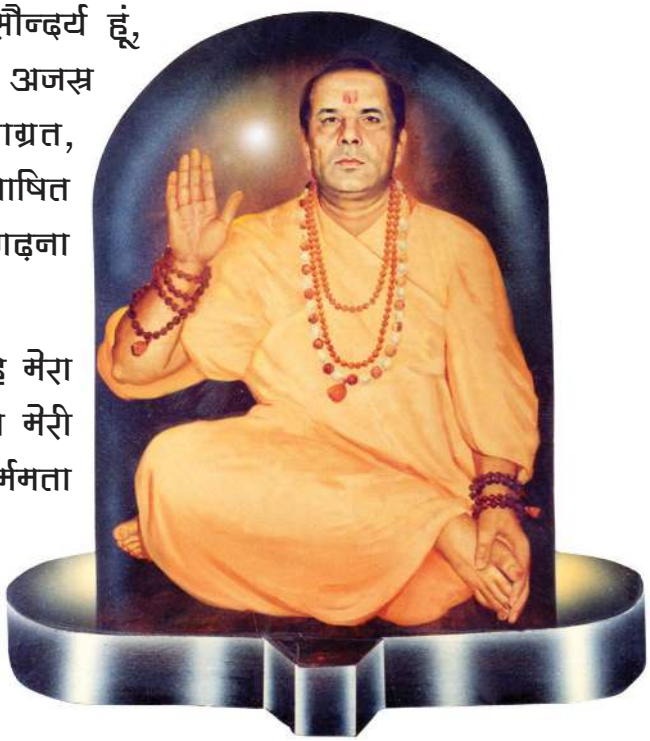

☆ मैं लीक से हटकर चलता हूं, विद्रोह मेरा स्वभाव है, रूढ़ियों पर प्रहार करना मेरी नियति है, पाखण्ड और ढोंग पर निर्ममता पूर्वक प्रहार करना मेरा जीवन है।

☆ जो कुछ तुमने कूड़ा-करकट अपने दिमाग में भर लिया है वह जल जाए, जो कुछ संदेह की दीवारें खड़ी कर दी हैं वे भरभरा कर गिर जाएं, जो कुछ कंकर-पत्थर चुनकर इकट्ठे किए हैं वे हट जाएं।

☆ तुम्हारे चित्त, मन, हृदय पर जो कुछ स्याह है, कालापन है वह समाप्त हो जाए, आज तक तुममें जो गंदा-गलीच था वह मर जाए, तब फिर मैं नए सिरे से तुम्हारा निर्माण करूं देवदूत की तरह, अद्वितीय मानव की तरह, दुर्लभ शिष्य की तरह।

☆ मैं उत्तराधिकार में तुम्हें प्रहार करने की कला सिखाना चाहता हूं, जिससे कि वे ढोंगियों और आलोचकों पर वज्र की तरह प्रहार कर सकें, चुनौतियों का जवाब दे सकें और फुफकारती आंखों को नोचकर फेंक सकें।

☆ और उत्तराधिकार में देना चाहता हूं प्रेम... ताकि वे दग्ध हृदयों पर फुहार बनकर बरस सकें, जलते हुए दिलों का मरहम बन सकें, बिलखते हुए आंसुओं की हंसी बन सकें, छटपटाते हुए प्राणों की संजीवनी बन सकें।

☆ मैं, मेरी करुणा, मेरा स्नेह, मेरी आत्मीयता और मेरा प्रेम ही उत्तराधिकारिता के रूप में अपने शिष्यों को देना चाहता हूं।

शिष्य धर्म

- शिष्य यदि सच्चे हृदय से पुकारे, तो ऐसा हो ही नहीं सकता कि उसका स्वर गुरुदेव तक न पहुंचे। उसकी आवाज गुरु तक पहुंचती ही है। इसमें कभी संदेह नहीं करना चाहिए।
- शिष्य चाहे वह बीस दिन पहले जुड़ा हो अथवा बीस साल पहले, गुरु की दृष्टि में सभी बराबर ही होते हैं। इसलिए प्रत्येक शिष्य को वरिष्ठ गुरुभ्राताओं एवं गुरुबहिनों को सम्मान तो देना चाहिए, आदर तो करना चाहिए, परन्तु उसे अपनी श्रद्धा को मात्र गुरुदेव के चरणों के लिए ही सुरक्षित रखना चाहिए।
- यथा सम्भव व्यर्थ की चर्चाओं में न पड़कर गुरुदेव का ही ध्यान, मनन करें। दूसरों की आलोचना अथवा निन्दा करने से शिष्य का जो बहुमूल्य समय अपने कल्याण में लगना चाहिए, वह व्यर्थ हो जाता है, जिसका प्रभाव उसके द्वारा की गई साधनाओं पर भी पड़ता है।
- यह आवश्यक नहीं कि कोई समस्या हो अथवा जीवन में कोई बाधा आई हो, तभी गुरु चरणों में पहुंच कर प्रयोग सम्पन्न किए जाएं। गुरु के दर्शन मात्र से ही शिष्य का सौभाग्य एवं पुण्य कर्म जाग्रत होते हैं, इसलिए शिष्य को निरन्तर गुरु से सम्पर्क बनाए रखना चाहिए।
- शिष्य के लिए गुरु ही सर्वस्व होता है। यदि किसी व्यक्ति की मित्रता राजा से हो जाए, तो उसे किसी छोटे बड़े अधिकारी की सिफारिश की क्या आवश्यकता है? इसलिए श्रेष्ठ शिष्य वह है, जो अपने मन के तारों को गुरु से जोड़ता है।
- यदि कोई मंत्र लें, यदि कोई साधना विधि लें, तो गुरु से ही लें अथवा गुरुदेव रचित साहित्य से लें। अन्य किसी को भी गुरु के समान नहीं मानना चाहिए।
- शिष्य का धर्म है कि वह व्यर्थ के वाद-विवाद या चिंतन में न पड़कर पूर्ण तल्लीन होकर गुरु सेवा करे। मन पर नियंत्रण प्राप्त करने का गुरु सेवा से अच्छा कोई माध्यम नहीं है।
- गुरु की आलोचना या निंदा करना या सुनना सच्चे शिष्य के लक्षण नहीं है। गुरु एक उच्च धरातल पर होते हैं इसलिए उनके व्यवहार को समझ पाना संभव नहीं। शिष्य का तो यह धर्म है कि वह इस ओर ध्यान न दे कि गुरु क्या कर रहे हैं अपितु इस बात पर ध्यान दे कि गुरु ने उसे क्या करने को कहा है।
- गुरु तो स्वयं शिव है, यही भाव लेकर अगर शिष्य चलता है तो एक दिन स्वयं शिवत्व उसमें समाहित हो जाता है। गुरु का यही उद्देश्य है कि शिष्य को शिवत्व प्रदान करे। इसलिए इसी चिंतन के साथ शिष्य को गुरु का स्मरण करना चाहिए।